

1. स्याखी

classmate

Date

Page

शब्दार्थ

बाँणी - वाणी

आपा - अहंकार

सीतल - ठंडा

कस्तुरी - एक सुगन्धित पदार्थ

कुडलि - नाभि

माँहि - भीतर

में - उहंकर

हरि - भगवान

सुखिया - सुखी

अरु - और

भूतगम - साँप

बौरा - पामल

निदंकर - बुराई करने वाला

नेडा - निकट

आँगणि - आँगन

मिटि - मिटना

बिरह - वियोग

छात्र

प्रश्न - अभ्यास

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. मीठी वाणी बोलने से औरों का सुख और अपने मन को शीतलता कैसे प्राप्त होती है?

(ज): * मीठी वाणी बोलने वाले व्यक्तियों में अहंकार नहीं होता, मन शांत रहता है और दूसरे व्यक्ति भी उसके मधुर वचन सुनकर सुखी होते हैं।

* इसके विपरीत कर्कश और कटु वचन मन पीड़ा देने वाले होते हैं।

2. दीपक दिखाई देने पर अंधियारा कैसे मिट जाता है? साखी के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

(ज): * जिस प्रकार दीपक अपनी राशनी से चारों ओर प्रकाश फैला देता है, उसी प्रकार ज्ञान रूपी दीपक अपने प्रकाश से अज्ञान रूपी अंधकार को नष्ट कर देता है।

* इस प्रकार ज्ञान के प्रकाश से व्यक्ति का अहं भी समाप्त हो जाता है।

इ. ईश्वर कण-कण में व्याप्त है, पर हम उसे क्यों नहीं देख पाते ?

(ज):- * जिस प्रकार दिव्य की नाभि में कस्तूरी होने पर भी वह उसकी सुगंध को पाने के लिए पूरे जंगल में भटकता फिरता है, ठीक उसी प्रकार हमारे शरीर में ईश्वर का वास होने पर भी हम उसे पाने के लिए पूरे संसार में भटकते फिरते हैं।

4. संसार में सुखी व्यक्ति कौन है और दुखी कौन ? यहाँ सोना और जागना किसके प्रतीक हैं ? इसका प्रयोग यहाँ क्यों किया गया है ? स्पष्ट कीजिए।

(ज):- इस संसार में अज्ञानी और भागी व्यक्ति सुखी हैं, जो ज्ञानी हैं वे दुनिया की स्थिति देखकर दुखी हैं सोना और जागना ज्ञान और अज्ञान दोनों के प्रतीक हैं। ज्ञान और अज्ञान के प्रयोग से कवि संसार में नई चेतना जलाना चाहता है।

5. अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कबीर ने क्या उपाय सुझाया है ?

(ज):- अपने स्वभाव को निर्मल रखने के लिए कवि ने निंदक का अपने पास रखने की सलाह दी है क्योंकि उसकी निंदा करने से ही हमारे अंदर अहं का भाव नहीं आएगा और मन निर्मल तथा पवित्र हो जाएगा।

6. 'ऐकै अपिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ'- इस पंक्ति द्वारा कवि क्या कहना चाहता है।

(ज):- इस पंक्ति के माध्यम से कवि ईश्वर प्रेम के बारे में बताना चाहता है कि ईश्वर प्रेम ही हमें ज्ञान और मूर्ति मिल सकती है।

7. कबीर की उद्धृत साखियों की भाषा की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

(ज):- कबीरदास जी की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता अभिव्यक्ति की निष्कर्षिता है। अपनी शिक्षा के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा है कि - 'मसि कागद छुयो नही'

कलम गड़ी नहीं हाथ अर्थात् उन्होंने कभी भी कागज और कलम को हाथ तक नहीं लगाया। कबीर की भाषा का सुधुक्कड़ी भाषा या खिचड़ी भाषा की संज्ञा भी दी गई है। उनकी भाषा में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग मिलता है। उनकी भाषा में एक ऐसा सौंदर्य है जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता है। हृदय से निकली अभिव्यक्तियों के कारण उनकी भाषा सहज, सरल और मन पर सीधा प्रहार करने वाली है।

(ख). भाव स्पष्ट कीजिए -

1. विरह भुवंगम तन बसै, मंत्र न लागै कोइ।

(ज) इस पंक्ति का भाव है कि जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम रूपी विरह का सर्प बस जाता है, उस पर कोई मंत्र असर नहीं करता है। अर्थात् भगवान के विरह में कोई भी जीव सामान्य नहीं रहता है। उस पर किसी बात का कोई असर नहीं होता है।

2. कसुरी कुंडलि बसै, मृग दूँदै बन माँहि ।

(ज):- इस पंक्ति में कबीर कहते हैं कि जिस प्रकार छिपे अपनी नाभि से आती सुगंध मोहित रहता है परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह सुगंध उसकी नाभि में से आ रही है वह उसे इधर-उधर ढूँढता रहता है। उसी प्रकार अज्ञानी भी वास्तविकता से अनजान रहता है वे आनंदस्वरूप ईश्वर को प्राप्त करने के लिए विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में लिप्त रहता है। वह आत्मा में विद्यमान ईश्वर को सत्ता को पहचान नहीं पाता।

3. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं माँहि ।

(ज):- इस पंक्ति द्वारा कबीर का कहना है कि जब तक मनुष्य में अज्ञान रूपी अँधकार छाया है वह ईश्वर को नहीं पा सकता। अर्थात् अँधकार और ईश्वर का साथ-साथ रहना नामुमकिन है। जब ईश्वर की प्राप्ति होती है तब अँधकार दूर हो जाता है।

4. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।

(ज)- कबीर के अनुसार बड़े ग्रंथ, शास्त्र पढ़ने भर से कोई नहीं होता। अर्थात् ईश्वर की प्राप्ति नहीं कर पाता। प्रेम से ईश्वर का स्मरण करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। प्रेम में बहुत शक्ति होती है।

* कवि परिचय :

कबीर - (1398-1518)

कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ माना जाता है। गुरु रामानंद के शिष्य कबीर ने 120 वर्ष की आयु पाई। जीवन के अंतिम कुछ वर्ष मगहर में बिताए और वहीं चिरनिद्रा में लीन हो गए।

कबीर का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ था जब राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रांतियाँ अपने चरम पर थीं।

भाषा अध्यापन

Lesson Ended.

दाता पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित स्वर

उदाहरण के अनुसार लिखिए

उदाहरण - जिवै - जीना

औरन :- जीना औरों का

माँहे - के अंदर (में)

देखा - देखा

भुवंगम - सोंप

नेड़ा - निकट

आँगणि - आँगन

सबण - साबुन

मुवा -

पीव -

जालौ - जलाना

तास - उसका

योग्यता विस्तार :

- कस्तुरी के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए
कस्तुरी मृग जिसे अंग्रेजी में "Muskrat"
कहा जाता है, राक-दुल्हि और विशेष प्रजाति

का द्रिण है, इसे मुख्य रूप से इसकी कस्तुरी ग्रंथि के लिए जाना जाता है, जो कि बहुत ही मूल्यवान होती है। कस्तुरी एक सुगंधित

पदार्थ है, जिसका उपयोग इत्र और पारंपरिक दवाओं में किया जाता है, कस्तुरी मृग के बारे में मुख्य बातें प्रजाति और निवास स्थान : कस्तुरी मृग मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्रों, सेटूल एशिया, और पूर्वी एशिया के जंगलों में पाए जाते हैं। भारत में यह अंतराकट हिमाचल प्रदेश और अरुणाचल प्रदेश में मिलता है।

Lesson Ended.